PAGE .... DATE ..../..../....

* **साँची स्तूप के तोरण द्वार** ⇒ साँची का महास्तूप अपने चार तोरण द्वारों के लिए सर्वाधिक है। चारों द्वार एक जैसे आकार के 34 फुट ऊँचे है। प्रत्येक द्वार में दो भारी स्तम्भ है। जिनके ऊपर एक-एक शीर्षक है। शीर्षकों के ऊपर तीन क्षैतिज धरन है। जिनके सिरे स्तम्भ से बाहर निकले हुए तथा गोल है। तीनों धरनों के बीच स्तम्भ की सीध में चौकाईएं बीच की चापाकृति धरन के बीच खडी पट्टिया है। जिनके बीच में अश्वारोही तथा गजारोही उकेरे गई। शीर्षक से धरन के बाहरी सिरे की ओर कणवत झुकावदार भंगिमापूर्ण मुद्रा में सघन वृक्षों के बीच खडी शालभंजिका मूर्तिया अत्यन्त आकर्षण है। ऐसी ही शाल भंजिका मूर्तिया धरनो के बाहरी सिरो पर भी उकेरी गयी है। तोरण द्वारों के मूर्ति शिल्प के निम्न वर्गों में रखा जा सकता है।

1- बुद्ध के जीवन की चार घटनाये।
2- जातक कथाये।
3- ऐतिहासिक दृश्य।
4- देवताओं यक्ष, यक्षिणियों तथा वृक्ष का नारियों के साथ अंकन।
5- अभिप्राय व सज्जा।

बुद्ध के जीवन के चार घटनाओं में उनका जन्म सम्बोधि धर्मचक्र प्रवर्तन तथा महापरि निर्वाण की प्रमुख घटनायें उकेरी है। बुद्ध के जीवन प्रतीक रूप कमल हाथी, पूर्णघट से जन्म लेते हुए पद्मों को बनाया गया है। सम्बोधि (ज्ञान) का प्रतीक पीपल के पत्तो के नीचे आसन या केवल पीपल को माना गया। वाराणसी के मृगदाव को धर्मचक्र प्रवर्तन को चक्र के ऊपर रूप में दिखाया गया है। जिनमें मानवाकृतियों के साथ हिरण उत्कीर्ण किये गये है महापरि-निर्वाण का प्रतीक स्तूप है। पशु-पक्षियों को युग्म रूप में बनाया गया है। पशु वास्तविक और काल्पनिक दोनों प्रकार के है।

Scanned with CamScanner